GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

# कानपुर की हिन्दी पत्रकारिता : कल, आज और कल

**रमा शिव,**

शोधार्थी- हिंदी विभाग,

पंडित पृथी नाथ (पी०जी०) कॉलेज कानपुर

(सम्बद्ध- छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर)

Email-rmashivjaan@gmail.com

**प्रो०(डॉ०) निधि कश्यप,**

शोध निर्देशक, हिंदी विभाग,

पंडित पृथी नाथ (पी०जी०) कॉलेज कानपुर

**शोध सार -**

हिंदी पत्रकारिता का उद्भव भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है, पत्रकारिता का इतिहास आधुनिक युग के आरंभ के साथ जुड़ा है।कानपुर निवासी **पंडित जुगुल किशोर शुक्ल** ने ३० मई १८२६ को कलकत्ता से पहला हिंदी पत्र **उदन्त मार्तण्ड** प्रकाशित किया।कानपुर की हिंदी पत्रकारिता की परंपरा अंतरालों के बीच किसी न किसी रूप में जारी रही।भारतेंदु युग में कानपुर जनपद से **ब्राहमण** पत्रिका का प्रकाशन **पंडित प्रताप नारायण मिश्र** जी ने १८८३ ई० से प्रारंभ किया जिसका अनवरत प्रकाशन १८८७ ई० तक चला।पत्रकारिता शासन तंत्र और जनतंत्र के बीच सेतु का निर्माण करती है।कानपुर की हिंदी पत्रकारिता वर्तमान समय की प्रत्येक गतिविधि को अपने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुचाने में कृत संकल्पित है। वर्तमान हिंदी पत्रकारिता सामाजिक चेतना का ज्वलंत रूप है। कानपुर महानगर उत्तर भारत का एक ऐसा शहर है जहाँ औद्योगिक चेतना, मजदूर आंदोलन तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष का एक सशक्त संगम द्रष्टिगोचर होता है। इसी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पृष्ठभूमि में कानपुर की हिंदी पत्रकारिता ने न केवल सूचना देने का कार्य किया अपितु **राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक सौहार्द** को जीवंत रखने में महती भूमिका का निर्वाह किया।

**बीज शब्द –** उपनिवेशकाल, पत्रकारिता, स्वाधीनता, धर्मनिरपेक्षता, साम्प्रदायिकता, राष्ट्रीय विमर्श, लोकतान्त्रिक मूल्य, लोक साहित्य, लोक संस्कृति, संवैधानिक मूल्य |

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

**उपनिवेश काल में राष्ट्रीय एकता और सद्भाव का निर्माण**

उपनिवेश काल में कानपुर की हिंदी पत्र- पत्रिकाओं ने स्वाधीनता आंदोलन रुपी मशाल की लौ प्रज्वलित रखा।कानपुर की हिंदी पत्र -पत्रिकाओं ने अंग्रेजी शासन की नीतियों का खुलकर विरोध किया तथा स्वदेशी आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन की अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन बनकर नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति सचेत किया।**"पत्रकारिता ही एक मात्र ऐसी वृत्ति है जिसमें हर रोज परीक्षा देनी पड़ती है |"**[1] कानपुर की हिंदी पत्रकारिता ने जनभाषा को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर लोगों को जात-पात, छुआ-छूत, धर्म तथा वर्ग से ऊपर उठाकर राष्ट्रीय सद्भाव को आगे बढ़ाया।इस समय की पत्रकारिता ने कानपुर की जनता को यह ज्ञान कराया कि राष्ट्रहित सर्वोपरि होता है और उसके सामने व्यक्तिगत हित कुछ भी नहीं है।कानपुर की हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में उदन्त मार्तण्ड पत्र मील का पत्थर सिद्ध हुआ।इस पत्र के संपादक कानपुर निवासी पंडित युगुल किशोर शुक्ल जी थे।शुक्ल जी का जन्म १८ मई १७८८ ई० में कानपुर के प्रसिद्ध कान्यकुब्ज ब्राहमण परिवार में हुआ था।शुक्ल जी बहुभाषाविद थे उनका हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला और फारसी पर जबरदस्त अधिकार था।पंडित युगुल किशोर शुक्ल जी ने १८५० ई० में **सामदंड मार्तण्ड** नामक एक साप्ताहिक हिंदी पत्र का प्रकाशन शुरू किया किन्तु यह समाचार पत्र भी कलकत्ता जैसे महानगर में अपने को स्थापित करने में असमर्थ रहा फलस्वरूप अति शीघ्र ही यह समाचार पत्र बंद हो गया।"शुक्ल जी मनसा, वाचा, कर्मणा से पत्रकार थे और पत्रकारिता के क्षेत्र में नये - नये प्रयोग करते तथा घर- फूंक तमाशा देखने के अभ्यस्त थे।उन्होंने **उदन्त मार्तण्ड** का प्रकाशन कर हिंदी पत्रकारिता जगत में अपना अडिग स्थान स्वनिर्मित किया जिस पर हर हिंदी भाषा- भाषी तथा पत्रकार बंधु को गर्व है |"[2]

**मजदूर चेतना एवं सामाजिक सद्भाव**

कानपुर औद्योगिक शहर होने के कारण मजदूरों का गढ़ रहा। कानपुर की पत्रकारिता ने मजदूरों के अधिकारों को अभिव्यक्ति देकर राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया।यहाँ की पत्र-पत्रिकाओं ने पूँजीपतियों और मजदूरों के संघर्ष को वर्ग संघर्ष के रूप में न रखकर सामाजिक न्याय के प्रश्न की तरह उठाया।विद्यार्थी जी ने अपने पत्र प्रताप के माध्यम से मजदूरों,किसानों, मध्यवर्ग तथा बुद्धिजीवियों के मध्य संवाद स्थापित करने में महती भूमिका का निर्वाह किया।इस तरह से प्रताप पत्र ने सामाजिक सद्भाव को और मज़बूत करने का स्तुत्य प्रयास किया। **"२१ जनवरी १९१८ के प्रताप में "गरीबों का कष्ट " शीर्षक लेख छपा।युद्ध के कारण दैनिक व्यवहार की चीजे महँगी होती जा रही हैं।महँगी सभी चीजे हुई है, पर अन्न, नमक, तेल और कपड़ा ऐसी चीजें हैं जिनके बिना किसी का गुजारा नहीं होता।बंगाल में कुछ लोगों ने लूटमार शुरू कर**

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

**दी ।विद्यार्थी जी इन्हें लुटेरों से अलग करते हुये कहते हैं, "जिनके पेट क्षुधा से जल रहे हों, और जिनके शरीर नंगे हों, उनके द्वारा छीना- झपटी कर बैठने पर खुद सुख से दिन बिताते हुए ईमानदारी का उपदेश देना एक ऐसी जबरदस्त ठगी और बदमाशी है जिसको कभी माफ़ नहीं कर सकता ।जिन चीजों को ढोने के लिए वाहन नहीं मिलते, उनका महंगा होना समझ में आता है पर घरों के किराए भी बढ़ाये जा रहे हैं ।गरीब आदमी की मुसीबत बढ़ती जाती है ।युद्ध के बाद भी इस कष्ट का अंत न होगा |"** [3]

**<u>स्वतंत्रत भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा और कानपुर की हिंदी पत्रकारिता</u>**

स्वाधीनता के पश्चात् कानपुर की हिंदी पत्रकारिता ने लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता एवं संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के भरसक प्रयास किये ।हिंदी पत्रकारिता ने क्षेत्रीय, भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोया ।यहाँ की पत्रकारिता ने आपातकाल एवं देश में अन्य संकटों के समय जनहित से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाया ।कानपुर की हिंदी पत्रकारिता राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव को निरंतर अक्षुण्ण रखने के लिए कटिबद्ध है ।

**<u>कानपुर की हिंदी पत्रकारिता की भाषा तथा शैली: एकता का अटूट माध्यम</u>**

यहाँ की पत्रकारिता की सहज- सरल और लोकोन्मुखी भाषा ने—

- आम जनमानस को राष्ट्रीय विमर्श से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया |" समाचार पत्रों की भाषा आम जनता की भाषा होनी चाहिए ।उसमे कठिन शब्दों का प्रयोग उसी समय होना चाहिए जब कि वैज्ञानिक शब्द को अन्य भाषा से हम अपनी भाषा में प्रकट कर रहे हो किन्तु अन्य बातों में समाचार पत्रों की भाषा में न संस्कृत का बोझ आना चाहिए न फारसी का दबाव ।वह साधारण से साधारण जन की समझ में आने वाली भाषा होनी चाहिए |"[4]
- बौद्धिक तथा लोकसंस्कृति के मध्य हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने सेतु का कार्य किया
- लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति एवं राजनीति को एक साझा मंच देकर भाषा यहाँ केवल अभिव्यक्ति का नहीं, अपितु **एकीकरण का सशक्त हथियार** बनी ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कानपुर की हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना को केवल आदर्श के रूप में नहीं, अपितु **व्यावहारिक सामाजिक मूल्य** के रूप में स्थापित करने का सराहनीय कार्य किया औपनिवेशिक प्रतिरोध से लेकर लोकतांत्रिक चेतना तक, कानपुर की पत्रकारिता ने विभाजनकारी प्रवृत्तियों के विरुद्ध अनवरत संघर्ष करते हुए भारतीय राष्ट्र-निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया। **"पत्रकार की समाज के प्रति बड़ी जिम्मेदारी है, वह अपने विवेक के अनुसार अपने पाठकों को ठीक मार्ग पर ले जाता है, वह जो कुछ**

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

**लिखे, प्रमाण और परिणाम का विचार कर लिखे और अपनी गति-मति में सदैव शुद्ध और विवेकशील रहे।पैसा कमाना उसका धेय्य नहीं है, लोक सेवा उसका धेय्य है और अपने काम से जो पैसा वह कमाता है, वह धेय्य तक पहुँचाने के लिए एक साधन मात्र है।"**[5]

कानपुर की हिन्दी पत्रकारिता भारतीय समाज के बौद्धिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास का एक सशक्त माध्यम रही है। उत्तर प्रदेश का व्यावसायिक नगर कानपुर न केवल आर्थिक दृष्टि से, अपितु पत्रकारिता के क्षेत्र में भी एक मुख्य केंद्र रहा है। कानपुर की हिन्दी पत्रकारिता ने स्वाधीनता आंदोलन से लेकर वर्तमान डिजिटल युग तक समाज के निर्माण, जागरूकता तथा राष्ट्रीय चेतना को दिशा दी है। यहाँ की पत्रकारिता की सहज- सरल और लोकोन्मुखी भाषा ने—

- आम जनमानस को राष्ट्रीय विमर्श से जोड़ने का सराहनीय कार्य किया।
- बौद्धिक तथा लोकसंस्कृति के मध्य हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने सेतु का कार्य किया।
- लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति एवं राजनीति को एक साझा मंच देकर भाषा यहाँ केवल अभिव्यक्ति का नहीं, अपितु **एकीकरण का सशक्त हथियार** बनी।

यह शोध-पत्र कानपुर की हिन्दी पत्रकारिता के **अतीत (कल), वर्तमान (आज)** तथा **भविष्य (कल)** का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है-

1. कानपुर की हिन्दी पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास क्रम का अनुशीलन करना।
2. कानपुर की हिंदी पत्रकारिता के वर्तमान स्वरूप एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना।
3. कानपुर की हिंदी पत्रकारिता की भविष्य की संभावनाओं एवं दिशा का मूल्यांकन करना।

यह अध्ययन मुख्यतः **ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति** पर आधारित है। द्वितीयक स्रोतों जैसे पुस्तकें, शोध-पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ एवं ऑनलाइन सामग्री का उपयोग यथासंभव किया गया है। कानपुर में हिन्दी पत्रकारिता का विकास उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में प्रारंभ हुआ। उस समय पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि **राष्ट्रीय चेतना का प्रसार** करना था। कानपुर की हिंदी पत्रकारिता ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आवाज उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**<u>निर्भीक पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी के पत्र प्रताप का सांप्रदायिक सौहार्द को जीवंत रखने में योगदान</u>**

कानपुर जैसे औद्योगिक शहर में बहुत से धर्मों को मानने वाले लोग परस्पर प्रेम और सद्भाव से रहकर विभिन्न संस्कृतियों के सहअस्तित्व को स्वीकार्य किये हुए हैं।कानपुर नगर में कई बार सांप्रदायिक तनाव की स्थितियां

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

उत्पन्न हुई जिसमें कानपुर की हिंदी पत्रकारिता ने जनमानस में परस्पर सौहार्द को बिगाड़ने वाली ख़बरों का औचित्यपूर्ण खंडन किया |

विद्यार्थी जी के पत्र प्रताप ने संवाद, संयम एवं मानवीय मूल्यों के हिमायती लेख प्रकाशित कर राष्ट्रीय एकता और सद्भाव को बढ़ावा दिया।प्रताप पत्र ने कानपुर में दंगों एवं हिंसा के खिलाफ स्पष्टरूप से संपादकीय लेख लिखकर हिंदी पत्रकारिता **के प्रहरी** का कार्य किया। "गणेश जी भी अपनी लेखन कला के द्वारा कानपुर के समाज में चिरपरिचित हो गए थे।उनके पास धन नहीं था, मोटर नहीं थी, ओजस्वी लेखन कला थी।उनके लेख कर्मवीर, अभ्युदय और हितवाणी आदि पत्रों में छपा करते थे।कानपुर में इन सभी पत्रों का अधिक प्रचार था, फलस्वरूप गणेश जी के नाम से छोटे-बड़े सभी लोग परिचित हो गए थे।"[6]

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में गणेश शंकर विद्यार्थी के पत्र प्रताप का अप्रतिम स्थान है| यह पत्र पत्रकारिता के मूल्यों का संवाहक होने के साथ-साथ राष्ट्रीय मूल्यों का भी प्रबल पक्षधर था।प्रताप पत्र राष्ट्रीय एकता और अखंडता का पोषक होने के साथ-साथ सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ावा देता था।प्रताप पत्र अपनी पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक न्याय और समानता की वकालत करता था।प्रताप पत्र सभी धर्मो का सम्मान करता था |प्रताप पत्र अपनी पत्रकारिता के माध्यम से जनचेतना के निर्माण, लोकतंत्र के सजग प्रहरी के रूप में राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करने में सदैव सक्रिय रहा |स्वनाम धन्य अमर शहीद पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी जी का स्वाधीनता पूर्व हिन्दी पत्रकारिता में अप्रतिम स्थान है। विद्यार्थी जी एक निर्भीक ,सत्यनिष्ठ व समर्पित पत्रकार थे। विद्यार्थी जी ने अपने पत्र प्रताप में स्वाधीनता

पूर्व भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण किया था। विद्यार्थी जी सर्वधर्म समभाव और हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे। **प्रताप पत्र का उद्देश्य समस्त मानव समुदाय का मंगल करना था। प्रताप पत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह सभी लोगों के प्रति सदैव ईमानदार था।** प्रताप पत्र के यशस्वी संपादक गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने छल, दंभ, द्वेष, पाखंड, असत्य और अन्याय को कभी आश्रय नहीं दिया। विद्यार्थी जी ने अपने पत्र प्रताप के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता को नूतन आयाम दिए । **पराधीन भारत में अंग्रेज सरकार भारतीय जनमानस का अनैतिक शोषण कर रही थी, विद्यार्थी जी ने अपने पत्र प्रताप में अंग्रेज सरकार की शोषणवादी नीति की कटु आलोचना की "प्रताप" पत्र सत्य प्रिय, -न्याय प्रिय और निष्पक्ष पत्रकारिता का वाहक था। देश के स्वाधीनता संग्राम में जिस प्रकार से क्रान्तिकारी वीर सपूतों ने अपने प्राणो की आहुति दी, ठीक उसी प्रकार से विद्यार्थी जी के पत्र प्रताप ने भी भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया।** प्रताप पत्र का प्रकाशन 9 नवम्बर 1913 ई० को कानपुर में कोरोनेशन प्रेस से प्रारम्भ हुआ। यह एक साप्ताहिक पत्र

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

था जिसके सहयोगियों में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, श्री नारायण प्रसाद अरोड़ा और श्री शिवनारायण मिश्र जी थे। कोरोनेशन प्रेस के मुखिया श्री यशोदानन्दन जी ने भी प्रताप पत्र के प्रकाशन मैं अपना विशिष्ट योगदान दिया । प्रताप पत्र के संपादन का उत्तर दायित्व श्री गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने उठाया तथा व्यवस्थापक के रूप में श्री नारायण प्रसाद अरोड़ा जी ने अथक परिश्रम किया। प्रताप एक जनहितकारी पत्र था।**प्रताप पत्र का किसानों,मजदूरों, वंचितों, दलितों ,शोषितों, शिक्षित व अशिक्षित तथा अमीर व गरीब सभी लोगों को बेसब्री से इंतजार रहता था। सभी इसके मुखर पाठक थे।** प्रताप पत्र की भाषा जनसमान्य के पठन के उपयुक्त सरल व सहज थी। प्रताप पत्र केवल शहरी क्षेत्रों में ही नहीं अपितु ग्रामीण क्षेत्रों में भी सबकी पहली पसंद था। गणेश शंकर विद्यार्थी जी की पत्रकारिता देश के लोगो मे राष्ट्रीय भावना का संचार करके उन्हें स्वदेश प्रेम का पाठ पढ़ाती थी। **प्रताप पत्र भारतीय जनमानस में जागृति का संचार करता था। इस पत्र में ब्रिटिश हुकूमत का पुरजोर विरोध किया जाता था। प्रताप पत्र भारतीय स्वाधीनता का उन्नायक होने के साथ-साथ देश के आम जनमानस की अभिव्यकि का सशक्त माध्यम था** । प्रताप प्रेस नवोदित पत्रकारों की प्राथमिक पाठशाला थी । विद्यार्थी जी को अंग्रेज सरकार का विरोध करने के कारण कई बार कारावास की सजा हुई । विद्यार्थी जी के जेल जाने पर, श्री कृष्णदत्त पालीवाल, श्री माखन लाल चतुर्वेदी और श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन जी ने प्रताप पत्र का संपादन कुशलतापूर्वक किया। तद्युगीन कई हिन्दी पत्रकारों ने प्रताप प्रेस में पत्रकारिता संबंधी प्रशिक्षण प्राप्त किया। "गणेश जी भी 9 मार्च को जेल से छूटकर आ गए थे।वे अपनी पूरी सजा काटकर छूटे थे।सोलहवां दिन अर्थात 25 मार्च का दिन उनके जीवन का अंतिम दिन था।"[7]

**विद्यार्थी जी बीसवीं सदी के एक ऐसे सजग पत्रकार थे जिनको औपनिवेशिक भारत की राजनीति की कुशल जानकारी थी उन्होंने राष्ट्र के लोगों में स्वाधीनता की चेतना की अलख जगायी / विद्यार्थी जी भारतीय समाज में हिन्दी पत्रकारिता के माध्यम से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उन्नायक थे। 25 मार्च 1931 ई० को उनका बलिदान हिन्दू-मुस्लिम एकता को सुदृढ़ करने में मील का पत्थर सिद्ध हुआ।**

गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा संपादित **'प्रताप'** पत्र ने क्रांतिकारी चेतना को प्रबल किया। पंडित प्रताप नारायण मिश्र के पत्र 'ब्राह्मण' ने सामाजिक सुधार एवं राष्ट्रीय विचारधारा को बढ़ावा दिया।कानपुर की हिंदी पत्र-पत्रिकाओ ने राष्ट्रवाद तथा स्वाधीनता का आग्रह और सामाजिक सुधार आंदोलनों का समर्थन करके एक युगांतरकारी कार्य किया तथा जन-समस्याओं पर निर्भीक लेखनी के द्वारा पत्रकारिता को मिशनरी स्वरूप प्रदान किया।कानपुर महानगर उत्तर भारत का एक ऐसा शहर है जहाँ औद्योगिक चेतना, मजदूर आंदोलन तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष का एक सशक्त संगम द्रष्टिगोचर होता है। इसी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

आर्थिक पृष्ठभूमि में कानपुर की हिंदी पत्रकारिता ने न केवल सूचना देने का कार्य किया अपितु **राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक सौहार्द** को जीवंत रखने में महती भूमिका का निर्वाह किया। " मैं दो क्षेत्रों में गणेश शंकर जी का विशेष, अत्यंत महत्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक योगदान मानता हूँ।पहला क्षेत्र पत्रकारिता का है तथा दूसरा क्षेत्र राष्ट्रीय सद्भाव का है।"[8]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कानपुर की हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना को केवल आदर्श के रूप में नहीं, अपितु **व्यावहारिक सामाजिक मूल्य** के रूप में स्थापित करने का सराहनीय कार्य किया औपनिवेशिक प्रतिरोध से लेकर लोकतांत्रिक चेतना तक, कानपुर की पत्रकारिता ने विभाजनकारी प्रवृत्तियों के विरुद्ध अनवरत संघर्ष करते हुए भारतीय राष्ट्र-निर्माण में उल्लेखनीय योगदान दिया।

आज कानपुर की हिन्दी पत्रकारिता प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल तीनों रूपों में विकसित हो चुकी है। कानपुर से प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्रो में दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, अमर उजाला डिजिटल पोर्टल एवं सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के बावजूद लोगो की पहली पसंद बने हुए है |

**सन्दर्भ सूची**

1- पहला सम्पादकीय, विजयदत्त श्रीधर, पृष्ठ संख्या- २०, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली- ११०००२, प्रथम संस्करण- २०११

२- भारतीय पत्रकार : गतिविधियाँ और उपलब्धिया, डॉ० चक्रधर नलिन, पृष्ठ संख्या-11, बुनियादी साहित्य प्रकाशन, अमीनाबाद, लखनऊ, सन २००५-२००६

3- समाजवादी चेतना के समर्थक गणेश जी, डॉ० रामविलास शर्मा, पृष्ठ संख्या- 25, निर्भीक राष्ट्र नायक गणेश शंकर विद्यार्थी, संपादक- विद्या प्रकाश, प्रथम संस्करण : २०१५, अनुराग प्रकाशन, ४७६०-६१, द्वितीय तल, २३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

4- पत्रकार : मानस और दयित्त्व, माखनलाल चतुर्वेदी, पृष्ठ संख्या-172, पहला संपादकीय, विजयदत्त श्रीधर, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली-११०००२, संस्करण प्रथम, २०११

5- पत्रकारिता क्या और कैसे? गणेश शंकर विद्यार्थी, पहला सम्पादकीय , विजयदत्त श्रीधर , पृष्ठ संख्या- १६८, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली- ११०००२, संस्करण प्रथम, २०११

6- अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी, श्री व्यथित हृदय, पृष्ठ संख्या-35, गंगा प्रकाशन 518/6-बी, कड़कड़ी रोड, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली-११००३२, संस्करण-२०११

7- अमर शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी, श्री व्यथित हृदय, पृष्ठ संख्या-74, गंगा प्रकाशन 518/6-बी, कड़कड़ी रोड, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली-११००३२, संस्करण-२०११

8- सौहार्द और आत्मोत्सर्ग के पर्याय : गणेश जी, डॉ० शंकर दयाल शर्मा, पृष्ठ संख्या- 13, निर्भीक राष्ट्र नायक गणेश शंकर विद्यार्थी, संपादक- विद्या प्रकाश, प्रथम संस्करण : २०१५, अनुराग प्रकाशन, ४७६०-६१, द्वितीय तल, २३, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२